हिन्दुस्तान
1936
सत्य-सार्थक-सदैव

बारूद की ढेर पर

दुनिया में कम से कम चार ऐसे संवेदनशील स्थान हैं, जहां से किसी भी समय बुरी खबर की आशंका बनी रहती है। इनमें से दो मोर्चों पर तो इन दिनों घातक युद्ध छिड़ा हुआ है। इजरायल अकेले ही कम से कम चार देशों के साथ सीधे मुठभेड़ की स्थिति में है, तो उधर रूस और यूक्रेन के बीच अंतहीन बर्बरता का सिलसिला जारी है। वैसे, बुरी खबरों से भी सावधान रहने की जरूरत है। जैसे सोमवार सुबह अचानक खबर आई कि रूस के साराटोव शहर में एक ऊंची इमारत को यूक्रेन ने ड्रोन हमले में ठीक उसी तरह गिरा दिया, जैसे 9/11 को अमेरिका में अल कायदा ने वर्ल्ड ट्रेड टावर को गिराया था। साथ ही, यह भी अफवाह फैलाई गई कि यह रूस की सबसे ऊंची इमारत है। वास्तव में, 38 मंजिल की इस इमारत पर हुए हमले में केवल एक महिला की मौत बताई जा रही है। हालांकि, जल्दी ही इस खबर ने अपना महत्व गंवा दिया। जहां यूक्रेन ने रूस पर कुछ वार किए, वहीं रूस ने यूक्रेन की कुछ जगहों पर मिसाइलों की वर्षा कर दी।

अपनी नीति के अनुरूप रूस यूक्रेन पर घातक वार कर रहा है। गौर करने की बात है कि यूक्रेन से साराटोव शहर जितनी दूर है, लगभग उतनी ही दूर मास्को भी है। अगर मास्को में ऊंची इमारतों को निशाना बनाया गया, तो फिर रूस की आक्रामकता को रोकना मुश्किल हो जाएगा। सबसे बड़ी चिंता यह होती है कि जरूरत से ज्यादा आक्रामक और विघ्नसंतोषी तत्व रूस में भी होंगे और यूक्रेन में भी। अगर ऐसे तत्वों ने अराजकता का थोड़ा भी प्रदर्शन किया, तो युद्ध भड़कते देर नहीं लगेगी। ठीक यही बात पश्चिम एशिया में भी लागू होती है। ताकतवर ईरान सहित लगभग आधा दर्जन देश युद्ध से दुखी और आक्रामक हैं। अनेक देशों के धैर्य की परीक्षा हो रही है। अगर इन देशों के अराजक तत्वों ने एक भी निशाना गलत लगा दिया, तो फिर युद्ध को विकराल होने से कौन रोकेगा? आज दुनिया की जो स्थिति है, उसमें विश्व स्तर पर सत्ता और अर्थव्यवस्था के समीकरण तेजी से बदल रहे हैं। ध्यान रहे, प्रथम विश्व युद्ध की वजहों में जर्मनी का उदय और ओटोमन साम्राज्य का पतन भी शामिल था। यूरोप में शक्ति संतुलन बिगड़ गया था और राष्ट्रों के बीच आर्थिक प्रतिस्पर्द्धा बहुत बढ़ गई थी। ऑस्ट्रो-हंगेरियन सिंहासन के एक उत्तराधिकारी की हत्या हुई और प्रथम विश्व युद्ध छिड़ गया। लगभग पांच साल तक दुनिया में खून की नदियां बहती रहीं। सरकारों से निपटा जा सकता है, पर खुरापातियों की गारंटी कौन लेगा? क्या युद्ध के मैदान में उतरा हुआ कोई देश ऐसी गारंटी दे सकता है?

अनेक देशों के धैर्य की परीक्षा हो रही है। अगर इन देशों के अराजक तत्वों ने एक भी निशाना गलत लगा दिया, तो फिर युद्ध को विकराल होने से कौन रोकेगा?

दूसरा विश्व युद्ध तो परमाणु हमले की वजह से और ज्यादा भयावह हो गया था, पर परमाणु हमले की स्थिति क्यों आई? अगर अमेरिका युद्ध में सीधे न पड़ने की अपनी नीति पर चल रहा था, तब उसके पर्ल हार्बर बंदरगाह पर हमला बोलने की जापान को क्या जरूरत थी? किसी जापानी ने एक गलत फैसला लिया और अमेरिका ने युद्ध मैदान में कूदकर उसे ऐसा बर्बर रूप प्रदान कर दिया कि इंसान आज भी हिरोशिमा और नागासाकी की त्रासदी याद करके रोते हैं। दुनिया का वह हिस्सा पलक झपकते तबाह हो गया था। क्या दुनिया की महाशक्तियां आज भी वैसी विभीषिका की अभिलाषी हैं? क्या रूस, यूक्रेन, इजरायल, अमेरिका, चीन जैसे देश युद्ध-जनित तबाही को भूल गए हैं? आज युद्ध ही नहीं, युद्ध के हालात पर भी लगाम लगाने की कोशिश होनी चाहिए।

हिन्दुस्तान Hindustan | 75 साल पहले 27 अगस्त, 1949

शिक्षा-प्रणाली में संशोधन

देश की शिक्षा-प्रणाली में संशोधन की आवश्यकता निर्विवाद है। वर्तमान शिक्षा-प्रणाली का आविष्कार विदेशियों ने किया था और उसका उद्देश्य विदेशी राज्य की आवश्यकताओं को पूरा करना था। इसलिए देश की शिक्षा-प्रणाली में विदेशीपन का बोलबाला है तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है। यह सन्तोष का विषय है कि स्वतन्त्र भारत की सरकार का ध्यान शिक्षा-प्रणाली में संशोधन करने की ओर गया है। उसने प्रसिद्ध शिक्षा-विशारद डा. राधाकृष्णन की अध्यक्षता में इस विषय की आवश्यक जांच पड़ताल करने के लिए एक कमीशन नियुक्त किया था, जिसमें कतिपय विदेशी विशेषज्ञ भी सम्मिलित किये गये थे। इस कमीशन ने निर्दिष्ट अवधि में जांच-पड़ताल का काम समाप्त कर लिया और अपनी रिपोर्ट शिक्षा-मंत्री के सामने प्रस्तुत कर दी है। कमीशन का काम काफी व्यापक और विशाल था और इस प्रकार की जांच-पड़ताल के पिछले उदाहरणों की तुलना में उसने अपना काम थोड़े समय में समाप्त कर दिया, यह उसके लिए श्रेय की बात है। कमीशन की रिपोर्ट के प्रकाशन में अभी कुछ समय लगेगा, किंतु उसकी मुख्य बातों पर कमीशन के अध्यक्ष ने जो प्रकाश डाला है, उससे कमीशन की सिफारिशों के बारे में मोटा अन्दाज लगाया जा सकता है।

डा. राधाकृष्णन ने बताया है कि प्रत्येक देश की शिक्षा उसकी विशिष्ट प्रतिभा की द्योतक होती है। देश ने जो आदर्श और उद्देश्य अपने सामने रखे होते हैं, उनके अनुरूप ही शिक्षा दी जाती है। शिक्षा का भारतीय विचारों और जीवन के साथ साम्य होना चाहिए। इसलिए शिक्षा कमीशन की सिफारिशों में इस बात पर जोर दिया गया है कि हमारी शिक्षा-प्रणाली से विदेशीपन को हटाकर उसे भारतीय रूप दिया जाये, ताकि हमारे नवयुवक संसार के सामने भारतीय प्रतिभा का ठीक-ठीक नमूना उपस्थित कर सकें। स्वतन्त्र भारत का जो विधान बन रहा है, उसमें हमारा लक्ष्य स्पष्ट रूप से अंकित किया गया है। हम ऐसे लोकतन्त्र का विकास करना चाहते हैं, जो स्वतन्त्रता, समानता और बन्धुता के मौलिक सिद्धांतों पर आधारित होगा। हमारी शिक्षा-प्रणाली का उद्देश्य ऐसे लोकतन्त्र के सुयोग्य नागरिक तैयार करना होना चाहिए। कमीशन की इस स्थापना से किसी को विरोध नहीं हो सकता।

उत्तर में राम और दक्षिण में मुरुगन

दक्षिण एक्सप्रेस
यहां स्कैन करें

एस. श्रीनिवासन | वरिष्ठ पत्रकार

तमिलनाडु में सत्तारूढ़ राजनीतिक दल द्रमुक भी अब भगवान मुरुगन अर्थात कार्तिकेय को तमिल पहचान या अस्मिता के प्रतीक के रूप में जोर-शोर से पेश कर रहा है।

उत्तर भारत में भगवान राम की जैसी महिमा है, ठीक वैसी ही दक्षिण भारत में भगवान मुरुगन या कार्तिकेय की है। वैष्णव परंपरा के प्रतीक भगवान राम और शैव परंपरा के एक प्रमुख प्रतीक मुरुगन में समानताएं हैं, जैसे राम धनुष-वाण रखते हैं, वैसे ही मुरुगन भाला रखते हैं। राम का प्रतिद्वंद्वी रावण है, तो मुरुगन का प्रतिद्वंद्वी शूरपद्म। वैसे बदलते दौर के साथ उत्तर के साथ ही दक्षिण भारत में भी देवताओं की छवियों को नए रूप दिए गए हैं। अब चित्रों में योद्धा राम की तरह ही मुरुगन भी 'सिक्स-पैक' धारी हैं। अगर भारतीय जनता पार्टी ने बहुत हद तक भगवान राम को हिंदू धर्म के आक्रामक प्रतीक के रूप में अपनाया है, वहीं तमिलनाडु में सत्तारूढ़ पार्टी द्रमुक अब भगवान मुरुगन को तमिल पहचान या अस्मिता के प्रतीक के रूप में पेश कर रही है।

तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम के स्टालिन जल्दी में हैं। तमिलनाडु और पुड्डुचेरी में लोकसभा की सभी 40 सीटें जीतने के 'इंडिया ब्लॉक' के अभियान का उन्होंने ही नेतृत्व किया था। अब उनकी नजर 2026 में होने वाले राज्य विधानसभा चुनावों में 200 से ज्यादा सीटें जीतने पर है। कुल 234 सदस्यीय सदन में गठबंधन के पास अभी 159 सीटें हैं, जिनमें से 133 द्रमुक के पास हैं। कांग्रेस के पास 18, वीसीके और वाम दलों के पास चार-चार सीटें हैं। अन्नाद्रमुक के नेतृत्व वाले विपक्ष के पास 62 सीटें हैं। पीएमके के पास 13 सीटें, भाजपा के पास चार और निर्दलीय भी चार हैं।

सत्तारूढ़ द्रमुक ने अपने लिए 200 सीटों का लक्ष्य रखा है। भाजपा ने भी लोकसभा चुनाव में 400 सीटों का लक्ष्य रखा था, पर यहां द्रमुक ने भाजपा से किसी भी तुलना से इनकार किया है। वैसे, द्रमुक की अपनी चिंताएं हैं। मुख्यमंत्री स्टालिन को सत्ता विरोधी लहर का सामना करना पड़ रहा है और आने वाले महीनों में इसके बढ़ने की आशंका है। द्रमुक को आगे कड़ी लड़ाई का सामना करना पड़ सकता है, क्योंकि प्रमुख प्रतिद्वंद्वी अन्नाद्रमुक अपने तेवर कड़े कर रही है। दूसरी ओर, भाजपा अपने उन सहयोगियों के साथ बने रहने को प्रतिबद्ध है, जिन्होंने उसे संसद में भले ही शून्य सीटें दी हैं, पर 18 प्रतिशत का संयुक्त वोट शेयर दिया है।

द्रमुक के लिए बड़ी चिंता राज्य की राजनीति में उभरते युवा चेहरे हैं। भाजपा प्रमुख के अन्नामलाई 40 वर्ष के हैं, आक्रामक और स्पष्टवादी हैं। वह राज्य में पार्टी को मजबूत करने और दिल्ली में अपने आकाओं को प्रभावित करने में कामयाब रहे हैं। उन्हें द्रविड़ नेताओं-कार्यकर्ताओं का एक प्रभावी जवाब माना जाता है।

कुल मिलाकर, मुख्यमंत्री स्टालिन की चिंता बढ़ती जा रही है। शायद विकट चुनौतियों के चलते ही उन्होंने ईश्वर की ओर रुख किया है। आश्चर्य नहीं कि पलानी में आयोजित ग्लोबल मुत्थमिल मुरुगन सम्मेलन का जमकर प्रचार किया गया। एचआरसीई या हिंदू धार्मिक एवं धर्मार्थ बंदोबस्ती मंत्रालय द्वारा आयोजित इस विशाल कार्यक्रम में दुनिया भर से हजारों प्रतिनिधियों को आमंत्रित किया गया। मुख्यमंत्री स्टालिन ने दावा किया है कि यह सम्मेलन विकास के उसी द्रविड़ मॉडल का एक और प्रमाण है, जो समावेशी और धर्मनिरपेक्ष है। स्टालिन ने अपनी सरकार की हिंदू समर्थक गतिविधियों को गिनाया, जिसमें मंदिरों का नवीनीकरण भी शामिल है। उन्होंने बताया है कि कैसे उनकी सरकार पलानी मंदिर के बुनियादी ढांचे में सुधार कर रही है। ध्यान रहे, पलानी मंदिर तमिलनाडु में भगवान मुरुगन के प्रमुख छह मंदिरों में शुमार है।

यह जानना दिलचस्प होगा कि तमिल संस्कृति और भगवान मुरुगन आपस में अटूट भाव से जुड़े हुए हैं। दरअसल, मुरुगन को राज्य में तमिल भगवान के रूप में पूजा जाता है। समृद्ध तमिल साहित्य के संगम काल में ऐसे महाकाव्य लिखे गए, जो भगवान मुरुगन का खूब महिमामंडन करते हैं। उनके प्रमुख कारनामों में ब्रह्मा जी को कारागार में डालना और राक्षस राजा शूरपद्म को हराना शामिल है।

वैसे, तमिलनाडु में ऐसे अनेक सियासी समूह उभरे हैं, जो भगवान मुरुगन को अपना देवता मानने-बताने की दिलोजान से कोशिश करते हैं। एनटीके नामक तमिल राष्ट्रवादी पार्टी चलाने वाले पूर्व फिल्म निर्देशक सीमन दावा करते रहे हैं कि मुरुगन तमिलों के पूर्वज हैं। यहां तक कि अन्नाद्रमुक ने भी विशेष दिन थाई पूसम को सरकारी अवकाश घोषित करके मुरुगन भक्तों को खुश करने की कोशिश की है। थाई पूसम के दिन ही भगवान मुरुगन को राक्षस शूरपद्म पर महाविजय प्राप्त हुई थी। केंद्रीय मंत्री एल मुरुगन जब तमिलनाडु में भाजपा प्रमुख थे, तब उन्होंने भाला-धारी भगवान मुरुगन के विचारों के प्रचार के लिए एक 'भाला यात्रा' निकाली थी। दबाव इस तरह बढ़ा है कि अब सत्तारूढ़ पार्टी द्रमुक यह साबित करने जुट गई है कि वह धर्म के खिलाफ नहीं है।

वैसे द्रमुक के विचार नास्तिकता पर आधारित हैं। द्रविड़ कषगम के समय से ही इस दल में तर्कवादी प्रवृत्ति मजबूत रही है। पिछले कुछ वर्षों से यह दल अपने पुराने विचार को कमजोर कर रहा है। यह अब खुद को एक ऐसे दल के रूप में पेश कर रहा है, जिसकी अपनी मान्यताएं हो सकती हैं, पर एक सरकार के रूप में वह गैर-आस्तिकों सहित सभी आस्थाओं को स्थान देने के पक्ष में है।

दिलचस्प बात यह है कि अन्य राज्यों की तरह तमिलनाडु भी अत्यधिक धार्मिक है, पर मतदाताओं ने राजनीति और धर्म के बीच साफ अंतर किया है। धार्मिक मामलों का राजनीतिकरण करने की पिछली कोशिशें राज्य में नाकाम रही हैं। द्रमुक के सहयोगियों को लगता है कि मुरुगन के नाम पर आयोजित विशाल सम्मेलन के बाद भी हालात नहीं बदलेंगे। बहुत कड़ी प्रतिक्रिया सीपीएम की ओर से आई है। कांग्रेस पार्टी को भी लगता है कि यह निरर्थक प्रयास है। अयोध्या के चुनावी नतीजे से भी पता चलता है कि मतदाता धर्म को राजनीति से मिलाने में यकीन नहीं करते हैं। हालांकि, राज्य की अग्रणी दलित पार्टी वीसीके को लगता है कि भाजपा के विरोध के लिए ऐसे सम्मेलन करना महत्वपूर्ण है।

लोग अभी भूले नहीं हैं कि द्रमुक की सरकार में मंत्री और स्टालिन के पुत्र उदयनिधि ने सनातन धर्म की तीखी आलोचना की थी, जिसका उत्तर भारत में ज्यादा विरोध हुआ था। अब द्रमुक खुद को एक ऐसे धर्मनिरपेक्ष दल के रूप में पेश करने की कोशिश कर रहा है, जो धार्मिक गतिविधियों में हस्तक्षेप नहीं करता है और संविधान के अनुसार, ऐसी गतिविधियों को सुविधाजनक बनाता है।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

ताकि पेंशन सही मायने में दे सके सामाजिक सुरक्षा

यहां स्कैन करें

अरुण कुमार | अर्थशास्त्री

बुजुर्गों के लिए पेंशन एक सामाजिक सुरक्षा है। नई पेंशन योजना (एनपीएस) में चूंकि शेयर बाजार या अन्य वित्तीय संस्थानों में निवेश का प्रावधान था, इसलिए इसमें पुरानी पेंशन योजना (ओपीएस) जैसी सुरक्षा नहीं थी। फिर, ओपीएस में सरकार अपने बजट से पेंशन देती थी, लेकिन एनपीएस में यह प्रावधान हटा दिया गया था और बाजार में निवेश के बाद मिले रिटर्न के अनुपात में पेंशन का लाभ दिया जाता था, जो रकम अमूमन पुरानी पेंशन से कम होती थी। यही कारण है कि सरकारी कर्मी नई पेंशन योजना का विरोध व पुरानी पेंशन योजना की बहाली की मांग कर रहे थे।

यूपीएस के लाभ-हानि को समझने के लिए पेंशन की मूल संकल्पना को समझना आवश्यक है। भारत में 1930 के दशक में 58 साल में सेवानिवृत्ति की बात कही गई और वही पुरानी पेंशन योजना का आधार भी बनी। उस समय भारतीयों की औसत उम्र 35 साल होती थी। इसका मतलब था कि बहुत कम लोग ही 58 या 60 साल से अधिक जी पाते थे। ऐसे लोगों की संख्या बमुश्किल चार-पांच प्रतिशत होती थी। इस कारण सरकार को पेंशन भी बहुत कम लोगों को देनी पड़ती थी। अब भारतीयों की जीवन-प्रत्याशा काफी बढ़ गई है और 80-85 साल तक लोग जीने लगे हैं। इसका अर्थ है कि 60 साल में सेवानिवृत्त होने वाले व्यक्ति को अगले दो-ढाई दशकों तक सुरक्षा देने की अनिवार्यता है। यही विसंगति सरकारी खजाने पर भारी पड़ने लगी है और पेंशन नीति में सुधार की मांग होने लगी है।

हमारे देश में 1.8 करोड़ ही सरकारी मुलाजिम हैं, यानी कुल कामगारों का महज तीन प्रतिशत, पर पेंशन में बदलाव सभी पर असर डालेगा।

इस समस्या का एक निराकरण हम शिक्षकों ने कुछ वर्ष पूर्व सुझाया था। दरअसल, हमारा मानना है कि जो लोग सरकारी सेवा में हैं, वे सेवानिवृत्ति के बाद या तो निजी क्षेत्र में काम करने लगते हैं या खुद का अपना कोई धंधा शुरू कर देते हैं। वे इतने कुशल होते भी हैं। यही कारण है कि हमने सेवानिवृत्ति की उम्र 70 साल करने की मांग की। शिक्षकों के लिए सेवानिवृत्ति की आयु 65 साल है और अगर वे चाहें, तो अगले पांच साल के लिए भी उनकी सेवा बरकरार रखी जा सकती है। इसका फायदा कर्मियों को भी होता है और सरकार को भी। सरकार को जहां तुलनात्मक रूप से कम वर्षों के लिए पेंशन देनी पड़ती है, वहीं ज्यादा साल तक सेवा देने के कारण कर्मियों की बचत ज्यादा होती है।

इसके खिलाफ एक तर्क यह दिया गया था कि इससे बेरोजगारों के लिए अवसर घट जाएंगे, इसलिए हमने श्रमबल में सरकारी कर्मियों की संख्या बढ़ाने का भी सुझाव दिया था। दरअसल, हमारे देश में करीब 60 करोड़ लोगों के हाथों में रोजगार है, जिनमें से 1.8 करोड़ सरकारी मुलाजिम हैं, यानी कुल कामगारों में तीन प्रतिशत हिस्सा ही सरकारी कर्मचारियों का है, जबकि अन्य देशों में यह आंकड़ा छह से लेकर 10 प्रतिशत तक है। ऐसे में, अगर हम श्रमबल में सरकारी कर्मियों की संख्या बढ़ाने का काम करें, तो नौजवानों को रोजगार भी मिलेगा और सेवानिवृत्ति की आयु बढ़ने का कथित नुकसान भी नहीं होगा। सरकार चाहे, तो इसकी शुरुआत उन 10 लाख सरकारी पदों को भरने के साथ कर सकती है, जो इस वक्त रिक्त पड़े हुए हैं। रही बात संसाधन जुटाने की, तो इसके लिए प्रत्यक्ष कर और जीडीपी का अनुपात बढ़ाने पर काम होना चाहिए। यह अनुपात अभी सवा छह प्रतिशत ही है। संसाधान जुटाकर हम असंगठित क्षेत्र को भी पेंशन का लाभ दे सकेंगे।

इसी कारण एकीकृत पेंशन योजना में सुधार की मांग जोर पकड़ने लगी है। इसमें न सेवानिवृत्ति-आयु बढ़ाने की बात कही गई है और न प्रत्यक्ष कर-जीडीपी अनुपात को लेकर कुछ कहा गया है। फिर अन्य पिछड़े वर्गों, अनुसूचित जाति/ जनजाति के नौजवान 35-40 साल तक सरकारी नौकरी के लिए पात्र होते हैं, तो 58 या 60 साल में सेवानिवृत्ति से 25 साल तक वे सेवा देने में सक्षम नहीं होंगे और पूर्ण पेंशन का लाभ नहीं उठा सकेंगे। इसी तरह, न्यूनतम 10 साल की सेवा देने वालों को 10 हजार रुपये पेंशन देने की बात इसमें कही गई है, पर मुमकिन है, इस अवधि के बाद लोग बेहतर मौके की तलाश में जुट जाएं और दोनों लाभ उठाने लगें। जाहिर है, इन विसंगतियों को दूर करके ही हम सामाजिक सुरक्षा का सही लाभ कर्मचारियों को दे सकेंगे।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

मनसा वाचा कर्मणा

सबके पास हो बांसुरी

बचपन में प्रयागराज में जन्माष्टमी मनाने की स्मृतियां आज भी ताजा हैं। वह हल्दी-पानी से नहाना, खास तरह की खीर का बनना, भगवान के जन्म की धूमधाम, अब वैसा कहां? जब बांसुरी नहीं बजाता था, तब भी श्रीकृष्ण जन्मोत्सव पर उल्लास में रहता था। ईश्वर की कृपा से अब उन्हीं का वाद्य बजाता हूं। भगवान कृष्ण के इस वाद्य यंत्र में कहीं कोई चमड़ा नहीं, कोई तार नहीं है, केवल बांस का एक टुकड़ा भर है, जिसमें पूरे संगीत की संभावना समाई हुई है। आज मुझे 48 साल हो गए अपने घर, गुरुकुल में धूमधाम से जन्माष्टमी मनाते हुए। इस मौके पर लगातार बांसुरी का वादन होता है। मैं भी बजाता हूं और मेरे शिष्य भी लगातार बजाते हैं। मेरे वृंदावन के गुरुकुल और भुवनेश्वर के भी गुरुकुल में लगातार बांसुरी वादन होता है। भगवान का वाद्य बजाकर ही उनकी पूजा की जाती है। आज भी खूब पकवान बनते हैं, भोग लगता है और सभी को मिलता है।

एक और बात। कृष्ण की मुरली एक सुरक्षित वाद्य है। संसार में कहीं चले जाइए, हर जगह साजो-सामान की कड़ी जांच शुरू हो जाती है। तबला, सितार इत्यादि वाद्य देखते ही मांग होने लगती है कि खोलकर दिखाओ कि इसके अंदर क्या है, पर बांसुरी के साथ ऐसी कोई समस्या नहीं। भगवान का यह वाद्य हर जगह आसानी से पहुंच जाता है। लगभग पांच दशक पहले मैंने बजाना शुरू किया था, तब से मैंने दुनिया में बांसुरी को खूब विकसित होते देखा है। मेरा तो पूरा जीवन ही बांसुरी के नाम रहा है। इसे बजाना योग करने से कम नहीं है। यह भी संयोग या हमारा सौभाग्य ही है कि श्रीकृष्ण दुनिया के श्रेष्ठतम योगी कहे जाते हैं। दुनिया उन्हें आदर्श मानती है, कला क्षेत्र में भी वह आदर्श हैं और भक्ति-ज्ञान के क्षेत्र में भी वह अडिग स्तंभ की तरह हैं। हर युग में वह हमें भटकने से बचाते आ रहे हैं और आगे भी बचाएंगे। मेरा मानना है, श्रीकृष्ण का वाद्य बांसुरी जन-जन तक पहुंचना चाहिए, यह केवल वाद्य या संगीत का अंग नहीं है, यह योग से जुड़ी विद्या है। हमारे अच्छे स्वास्थ्य और सुकोमल मन से जुड़ी विद्या है।

आज संसार का कोई भी इंसान हो, अभिनेता हो या नेता हो, सबके हाथों को एक बांसुरी की जरूरत है। किसी के हाथों में बंदूक-तलवार न हो। संगीत से संसार सही राह पर आ सकता है। आज जगह-जगह संघर्ष है, युद्ध है, अनाचार है, इनका स्थायी समाधान जरूरी है। इसके लिए मन और सांस की आवाजाही को संयमित करना जरूरी है। सबके हाथों में अगर सबसे किफायती बांसुरी पहुंच जाए, तो सबका कल्याण संभव है। भगवान श्रीकृष्ण भी संसार में शांति और मैत्री चाहते थे, इसीलिए उन्होंने बांसुरी को अपने होंठों से लगाया। हम आज भी मंत्रमुग्ध हैं और हमेशा रहेंगे।

संगीत से संसार सही राह पर आ सकता है। भगवान श्रीकृष्ण भी संसार में शांति और मैत्री चाहते थे, इसीलिए उन्होंने बांसुरी को अपने होंठों से लगाया। हम आज भी मंत्रमुग्ध हैं और हमेशा रहेंगे।

पंडित हरिप्रसाद चौरसिया

जो बाइडन | अमेरिकी राष्ट्रपति

जब रूस ने एक निरर्थक जंग छेड़ी थी, तब भी यूक्रेन स्वतंत्र देश था। वह आज भी एक आजाद मुल्क है और जब यह युद्ध खत्म होगा, तब भी वह एक स्वतंत्र, संप्रभु और स्वावलंबी देश ही रहेगा।

अनुलोम-विलोम

एकीकृत पेंशन योजना

एक अच्छी पेंशन योजना की सौगात

पुरानी पेंशन योजना की बहुप्रतीक्षित मांग को देखते हुए सरकार ने यूनिफाइड, यानी एकीकृत पेंशन योजना को लागू कर केंद्रीय कर्मचारियों को सौगात दी है। सरकार की इस घोषणा से कर्मचारियों में खुशी की स्वाभाविक लहर है। इस योजना में सुनिश्चित पेंशन, परिवार को पेंशन, पेंशन की राशि का महंगाई दर के साथ जुड़ाव और सेवानिवृत्ति के समय ग्रेच्युटी के अलावा एक सुनिश्चित राशि के भुगतान की व्यवस्था की गई है। इससे केंद्र सरकार पर वर्ष 2025-26 के दौरान करीब 6,250 करोड़ रुपये का अतिरिक्त बोझ पड़ेगा, जो ज्यादा बड़ी रकम नहीं है। यह योजना 1 अप्रैल, 2025 से लागू होगी, जिससे लाखों केंद्रीय कर्मचारियों को फायदा होगा। पुरानी पेंशन व्यवस्था को बहाल करने के लिए विपक्ष और केंद्रीय कर्मचारी संगठनों का सरकार पर दबाव था। कतिपय जानकार बताते हैं कि केंद्र में मिली-जुली सरकार आने के कारण ही कर्मचारियों के हित में ऐसी पेंशन व्यवस्था आ सकी। वैसे सत्तारूढ़ दल से खार खाई पार्टियों की राज्य सरकारें अपने कर्मियों को पुरानी पेंशन व्यवस्था का लाभ देने की तैयारी में हैं, एकाध राज्य तो दे भी रहे हैं, लेकिन यूपीएस उससे कमतर नहीं है। इसका व्यापक लाभ कर्मचारियों को मिल सकता है, इसलिए राज्य सरकारों को भी अपने यहां इस तरह की पेंशन शुरू कर देनी चाहिए, ताकि उनके कर्मचारियों को भी एक आदर्श पेंशन व्यवस्था का लाभ मिल सके। हालांकि, कुछ दल महज विरोध के लिए इस योजना का विरोध कर रहे हैं, लेकिन इसका बहुत ज्यादा शायद ही असर पड़ सकेगा। एकीकृत पेंशन योजना अब तक की सबसे अच्छी योजना है, जिसका लाभ सभी कर्मचारियों को उठाना चाहिए।

युगल किशोर राही, टिप्पणीकार

कर्मियों के हित में

साल 2004 से बंद ओपीएस व एनपीएस की त्रुटियों को ध्यान में रखते हुए ही केंद्र सरकार ने यूपीएस का एलान किया है। यह कर्मचारियों के हित में है। राज्य सरकारें भी इसे अपने यहां लागू करें, ताकि उनके कर्मियों को भी वृद्धावस्था में खुद और परिवार को पेंशन का लाभ नए सिरे से मिल सके। साथ ही, पेंशन गारंटी भी राज्यों के तमाम वेतनभोगियों को प्राप्त हो सके। भले ही विपक्ष ने इसे 'यू टर्न' कहा हो, किंतु यूपीएस का सभी कर्मचारियों ने हर्ष के साथ स्वागत किया है। चूंकि एकीकृत पेंशन योजना पुरानी और नई पेंशन योजना का बेहतर संस्करण है, इसलिए केंद्र को इसके लिए साधुवाद देना चाहिए कि उसने अपने कर्मचारियों के हित में दूरदर्शी फैसला लिया है।

शकुंतला महेश नेनावा, टिप्पणीकार

इसकी विसंगतियों को दूर करना होगा

यूपीएस (एकीकृत पेंशन योजना) सरकारी कर्मचारियों को धोखा देने और उन्हें बांटने की एक चाल के अलावा और कुछ नहीं है। सरकार यूपीएस लाकर एनपीएस (नई पेंशन योजना) के खिलाफ और ओपीएस (पुरानी पेंशन योजना) की बहाली के लिए चल रहे आंदोलन को रोकने की हताशा भरी कोशिश कर रही है। इसका उसे शायद ही लाभ मिल सकेगा। केंद्र सरकार द्वारा यूपीएस की शुरुआत को व्यापक रूप से एनपीएस के खिलाफ और ओपीएस के लिए सरकारी कर्मचारियों के अथक आंदोलन के कारण मजबूर होकर उठाया गया एक कदम माना जा रहा है। मगर वास्तव में, यह एनपीएस के मुकाबले कोई गुणात्मक बदलाव नहीं दर्शाता है, बल्कि यह पुरानी पेंशन योजना के कर्मचारियों के अधिकार को पूरी तरह से नकारना है, जो सरकार को दी गई दशकों की सेवा के बदले में मिलने वाली एक लाभ योजना थी। ओपीएस निर्विवाद रूप से एक ऐसी परिभाषित लाभ योजना थी, जिसमें कर्मचारियों को अपनी पेंशन के लिए कोई योगदान देने की जरूरत नहीं थी। न्यायालयों द्वारा पेंशन की व्याख्या विलंबित वेतन के रूप में की गई थी, पर एनपीएस की तरह यूपीएस भी अंशदायी योजना है और कर्मचारियों को डीए सहित अपने वेतन के 10 फीसदी अंशदान के लिए मजबूर किया जा सकेगा।

कर्मचारियों को उनकी सेवा के अंत में उनकी ग्रेच्युटी में भारी कटौती करके भी बड़ा झटका दिया गया है। आम तौर पर, औसतन, एक सरकारी कर्मचारी को उनकी सेवा के अंत में मिलने वाली अनुमानित राशि न्यूनतम 20 लाख रुपये होती थी, लेकिन अब इसे हर छह महीने की सेवा के लिए मासिक वेतन के 10 प्रतिशत तक घटा दिया जा रहा है। इसके साथ ही, ओपीएस में जीपीएफ का मिलने वाला लाभ भी छीन लिया गया है। इसके अलावा, यूपीएस एक बाजार संचालित योजना बनी हुई है और बाजार की अनिश्चितताओं पर निर्भर है। इसलिए, यूपीएस में किसी भी सुनिश्चित पेंशन के लिए जो भी प्रस्ताव हो, वह बेहद असुरक्षित है। देखा जाए, तो यूपीएस भी एनपीएस की तरह लाभ के रूप में पेंशन को नकारना जारी रखता है और इसे कर्मचारी द्वारा उसकी सेवा अवधि में किए गए योगदान के अनुपात में बनाता है। इसके अलावा, यूपीएस सुप्रीम कोर्ट के कई फैसलों और संविधान का भी घोर उल्लंघन है, इसलिए इस एकीकृत पेंशन योजना का हरसंभव विरोध किया जाना चाहिए और ओपीएस की बहाली के लिए आंदोलन को और तेज किया जाना चाहिए। यही कर्मचारियों के हित में है।

विद्याधर सिंह, टिप्पणीकार

ईश्वर के प्रति समर्पण निष्काम बना देता है

मनुष्य की इच्छाएं अनंत हैं। एक पूरी होने के बाद दूसरी जन्म ले लेती है। इन्हीं इच्छाओं को पूरा करने की चाह उसे भटकाती है। लेकिन, जब व्यक्ति ईश्वर के प्रति पूर्ण भाव से समर्पित हो जाता है तो उसे किसी इच्छा का बोध नहीं रहता। उसका चित्त शांत हो जाता है, यहां तक कि फिर उसमें मुक्ति की कामना भी शेष नहीं रहती।

अध्यात्म

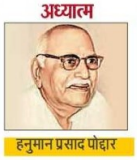

हनुमान प्रसाद पोद्दार

मनुष्य के मन में नाना प्रकार के मनोरथ हैं। संसार में वह सदा ही अपने को किसी-न-किसी अभाव से ग्रस्त पाता है। किसी भी अवस्था में वह यह अनुभव नहीं करता कि मुझको सब कुछ मिल गया, अब और कुछ भी नहीं चाहिए। बड़ी-से-बड़ी दुर्लभ वस्तु के पाने पर भी वह उसमें किसी कमी का अनुभव करता है और यह सोचता है कि जब मेरी यह कमी पूरी होगी, तब मुझे शांति मिलेगी। यह अभाव का अनुभव कभी मनुष्य के चित्त को शांत नहीं होने देता। शांति की दो ही स्थितियां हैं। एक तो वह, जिसमें पहुंचने पर वह स्वयं शांतिस्वरूप हो जाता है। फिर उसे किसी वस्तु की कमी का कभी बोध होता ही नहीं। वह सभी में सर्वत्र, सर्वथा और सर्वदा एकमात्र परमात्मा को देखता है और अपने को उनसे अभिन्न पाता है। उसकी यह पूर्णता उसकी स्वरूपभूता होती है, इसी का नाम मुक्ति है। दूसरी वह स्थिति है, जिसमें वह अपने को सदा-सर्वदा भगवान के संरक्षण में पाता है, जहां भगवान अनंत हाथों और अनंत शक्तियों से उसकी कमी को पूरा करने के लिए सदा प्रस्तुत रहते हैं, परंतु उसे भगवान को पाकर किसी कमी का अनुभव होता ही नहीं, वह कृतार्थ हो जाता है। यहां तक कि मुक्ति की ओर भी उसकी दृष्टि भूलकर भी कभी नहीं जाती। वह इस बात को पहले ही जान चुका होता है कि जगत में जितने भी यज्ञ-तप किए जाते हैं, विभिन्न देवताओं के रूप में एकमात्र भगवान ही उन सबके भोक्ता हैं; अतएव देवोपासनारूप कर्म से जिनको जो कुछ भी फल मिलता है, सब भगवान के अपरिमित भंडार से ही आता है। भगवान ही सब लोकों के एकमात्र ईश्वर हैं और वे भगवान जीवमात्र के परम सुहृदय होने के कारण मेरे भी परम सुहृदय हैं। यह जानते ही उसे शांति मिल जाती है। उसे निश्चय हो जाता है कि अब मैं सब प्रकार से सुरक्षित और पूर्ण काम हो गया। जब सर्वशक्तिमान भगवान मेरे परम सुहृदय हैं, तब मुझे किसका डर और किस बात का अभाव। ऐसी अवस्था में वह सब प्रकार से भगवान पर निर्भर करके निश्चिंत और शांतचित्त हो जाता है।

इसी प्रकार सकाम भक्तों में तीन तरह के भक्त माने गये हैं- अर्थार्थी, आर्त और जिज्ञासु ('आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी')। इनमें एक तो वह है, जो किसी भी अर्थ की सिद्धि के लिए- धन, जन, मान, यश, भोग, स्वर्ग आदि की प्राप्ति के लिए भगवान को भजता है। दूसरा वह है, जो प्रारब्धवश किसी संकट में पड़कर उससे त्राण पाने के लिए भगवान की भक्ति करता है और तीसरा वह है, जो भगवान की प्राप्ति का सरल और सहज पथ जानने के लिए भगवान को याद करता है। इन तीनों सकाम भक्तों की सकाम भक्ति को भी तभी पूर्ण समझना चाहिए, जब कि वे भगवान को ही एकमात्र आश्रय मानकर उन्हीं पर निर्भर रहें। तभी उन्हें अनायास फल भी मिलता है।

ध्रुव अर्थार्थी भक्त थे; वे ज्यों ही भगवान पर निर्भर हुए, त्यों ही उन्हें उनका इच्छित फल मिल गया। द्रौपदी और गजराज आर्त भक्त थे और जब तक वे दूसरों से त्राण की जरा भी आशा करते रहे, तब तक उनके संकट दूर नहीं हुए; जब एकमात्र भगवान पर निर्भर करके उनको पुकारा, तब उसी क्षण भगवान ने स्वयं प्रकट होकर उनके दुख दूर कर दिए। जिज्ञासु भक्त तो ऐसे बहुत हुए हैं, जो भगवान पर निर्भर करके भगवत प्रेरणा से भगवान के पथ पर सहज ही आरूढ़ हो गए हैं। सकाम भाव की इस निर्भरता के लिए बंदर के बच्चे से तुलना कर संत लोग बिल्ली के बच्चे का दृष्टांत दिया करते हैं। बंदर का बच्चा भूखा होने पर स्वयं कूदकर मां को पकड़ लेता है। परंतु भूखा बिल्ली का बच्चा मां की प्रतीक्षा करता हुआ अपने स्थान पर बैठा रहता है; स्वयं मां उसकी चिंता करती है और उसके पास आकर जहां ले जाना होता है, अपने मुंह से उठाकर उसे वहां ले जाती है।

इसी प्रकार जो मनुष्य किसी भी काम की सिद्धि के लिए श्रद्धा-विश्वासपूर्वक भगवत कृपा की प्रतीक्षा करते हुए भगवान पर निर्भर रहते हैं, उनके काम को भगवान स्वयं पधार कर पूरा कर देते हैं। नरसी मेहता आदि अनेक भक्तों के उदाहरण इसके प्रमाण हैं।

भगवान ही सब लोकों के एकमात्र ईश्वर हैं और वे भगवान जीवमात्र के परम सुहृदय होने के कारण मेरे भी परम सुहृदय हैं। यह जानते ही उसे शांति मिल जाती है। उसे निश्चय हो जाता है कि अब मैं सब प्रकार से सुरक्षित और पूर्ण काम हो गया। जब सर्वशक्तिमान भगवान मेरे परम सुहृदय हैं, तब मुझे किसका डर।

आस्था-अनास्था

डॉ. संजीव कुमार शर्मा

अध्यात्म और सांसारिकता का प्रतीक है पुनर्वसु नक्षत्र

पुनर्वसु नक्षत्र में जन्म लेनेवाले व्यक्ति का व्यक्तित्व कैसा होता है?
-निहारिका, जयपुर

पुनर्वसु नक्षत्र को पुनरावृत्ति या प्रकाश की वापसी के रूप में जाना जाता है। बृहस्पति द्वारा शासित और तरकश के प्रतीकवाला यह नक्षत्र 20 डिग्री मिथुन राशि से 3 डिग्री 20 मिनट कर्क राशि तक फैला है। व्यक्ति के जन्म के समय चंद्रमा के इस नक्षत्र में स्थित होने पर पुनर्वसु को उसका जन्म नक्षत्र माना जाता है। इस नक्षत्र में जन्म लेनेवाले जातक बुद्धिमान रचनात्मक, अनुकूल, आध्यात्मिक जगत से जुड़ाव रखते हैं। इस नक्षत्र पर बृहस्पति का प्रभाव सौभाग्य और ज्ञान लाता है। यह आध्यात्मिक विकास और सांसारिकता का प्रतीक है। इस नक्षत्र के चार चरणों के अलग-अलग प्रभाव होते हैं।

प्रथम चरण में यह मंगल द्वारा शासित होता है। इस चरण में जन्म लेनेवाले व्यक्ति उग्र, ऊर्जावान और उत्साहवाले होते हैं।

द्वितीय चरण शुक्र द्वारा शासित होता है। इस चरण में जन्म लेनेवाले व्यक्ति मजबूत, अंतर्ज्ञान और रचनात्मकता के प्रतीक होते हैं।

तृतीय चरण बुध द्वारा शासित होता है। इस चरण में जन्म लेनेवाले व्यक्ति धन, प्रसिद्धि और अधिकार के रूप में अच्छी सफलता पानेवाले होते हैं।

चतुर्थ चरण चंद्रमा द्वारा शासित होता है। चंद्रमा के प्रभाव के कारण ऐसे जातक भावुक होते हैं।

इस नक्षत्र वाले व्यक्ति रचनात्मक स्वभाववाले होते हैं। कला-संगीत के प्रति स्वाभाविक रुचि होती है। ऐसे व्यक्ति मीडिया, फैशन और मनोरंजन उद्योग में भी सफलता प्राप्त करते हैं।

इस नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति को अंकों की गणना करने की स्वाभाविक योग्यता होती है। यह व्यक्ति लेखन आदि क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करते हैं। स्वास्थ्य की दृष्टि से इस नक्षत्र में जन्मे लोग आमतौर पर स्वस्थ और तंदुरुस्त रहते हैं।

धन प्रबंधन की अच्छी समझ के चलते अकसर ठोस आर्थिक निर्णय लेने की क्षमता रखते हैं। अपने संबंधों में यह व्यक्ति अपने पार्टनर के प्रति

अत्यंत वफादार और समर्पित होते हैं और अपनी प्रतिबद्धताओं को गंभीरता से लेते हैं।

इस नक्षत्र में जन्म लेनेवाले व्यक्तियों के नकारात्मक प्रभावों को कम करने के लिए कुछ उपाय हैं :

पूर्णिमा के दिन भगवान शिव की पूजा-अर्चना करें। मंदिर में सफेद फूल, चावल या दही का दान करें।

दाहिने हाथ में चांदी का कड़ा या छल्ला धारण करें। प्रतिदिन 108 बार ओम नमः शिवाय मंत्र का जाप करें।

प्रत्येक सोमवार को घी और कपूर का दीपक जलाएं।

अमावस्या के दिन सफेद वस्त्र, दाल और मिठाई का दान करें।

बुधवार और शनिवार को भूखे लोगों को भोजन कराएं।

भेजें अपने सवाल

स्वर्ग-नरक की कल्पना का आधार क्या है?

पाप क्या है, पुण्य क्या है? धर्म क्या है, अधर्म क्या है? ईश्वर की आराधना कैसे करें? ऐसे सवाल अकसर हमारे मन में उठते हैं, पर इनका जवाब हमारे पास नहीं होता। मन-मस्तिष्क में आने वाले ऐसे ही सवालों के जवाब हमारे पैनल में शामिल धर्माचार्य आपको देंगे।

अपने सवाल हमें इस पते पर भेजें- धर्मक्षेत्रे, हिन्दुस्तान, 11वां तल, द आइकॉन टॉवर, एफ सी-24 सी, फिल्म सिटी, सेक्टर-16ए, नोएडा, गौतम बुद्ध नगर-201301 (उत्तर प्रदेश)

बोधकथा

बुद्ध ने नेत्रहीन व्यक्ति को तर्क से नहीं अनुभव से प्रकाश दिखाया

एक बार भगवान बुद्ध प्रवचन दे रहे थे। तभी वहां कुछ व्यक्ति एक नेत्रहीन व्यक्ति के साथ बुद्ध के पास आए। वह अंधा आदमी कोई साधारण इनसान नहीं था। वह एक महान शिक्षा शास्त्री और विद्वान था। वह तर्क करने में बहुत कुशल था। उसने अनेक विद्वानों को अपने तर्कों से पराजित किया था।

बुद्ध के पास आने पर वह उनसे भी तर्क-वितर्क करने लगा। तथागत को संबोधित करते हुए उसने कहा, 'सभी कहते हैं कि इस सृष्टि में प्रकाश मौजूद है। लेकिन, मैं कहता हूं कि नहीं है। मेरा मानना है कि इस दुनिया में प्रकाश जैसी कोई चीज नहीं है। और, यदि प्रकाश जैसी कोई चीज है तो मुझे उसका आभास करवाएं ताकि मैं उसे छू कर महसूस कर सकूं। यदि यह स्वाद लेने की वस्तु है तो मैं इसका स्वाद ले सकूं। अगर यह सूंघने की कोई चीज है तो मैं इसे सूंघ सकूं। या फिर यह कोई ध्वनि जैसी कोई वस्तु है तो आप इसे ढोल की तरह पीटें ताकि मैं इसे सुन सकूं। मेरी यही चार इंद्रियां हैं, जिससे मैं किसी वस्तु को महसूस करता हूं। और, जिस पांचवीं इंद्री के बारे में लोग बात करते हैं, मेरे विचार में वह कोरी कल्पना है। किसी के पास दृष्टि नहीं है। मेरी सोच में तो सभी लोग भ्रमित हैं।' तथागत समझ गए कि इस व्यक्ति को समझाना बहुत मुश्किल है क्योंकि प्रकाश को छू कर, चख कर, सूंघ कर या सुन कर महसूस नहीं किया जा सकता। यह व्यक्ति दूसरों को भ्रमित कह रहा है, जबकि यह खुद भ्रमित है। उसके पास नेत्र नहीं थे, लेकिन वह बुद्ध को चुनौती दे रहा था।

बुद्ध ने उससे कहा कि मैं कुछ साबित नहीं करूंगा। लेकिन मैं ऐसे वैद्य को जानता हूं, जो तुम्हारी नेत्रों की ज्योति को ठीक कर सकता है। तुम चाहो तो इसे मेरा तर्क कह सकते हो।

बुद्ध ने उसे वैद्य के पास भेजा। वैद्य के इलाज से छह महीने में ही उसकी आंखें ठीक हो गईं। उसे यकीन ही नहीं हुआ। वह खुशी से दौड़ता हुआ बुद्ध के पास पहुंचा और उनके पैरों पर गिर गया। और, बोला कि आपका मुझे वैद्य के पास भेजने का तर्क काम कर गया। इस पर तथागत ने कहा कि यह कोई तर्क नहीं था। अगर मैंने तुमसे तर्क किया होता तो मैं असफल हो जाता। क्योंकि कुछ चीजें ऐसी होती हैं, जिन्हें तर्क की कसौटी पर नहीं कसा जा सकता। उन्हें केवल अनुभव से ही जाना जा सकता है। जैसे तुम्हारी आंखें ठीक होने पर तुमने प्रकाश का अनुभव किया और जान लिया कि प्रकाश क्या होता है।

अश्वनी कुमार

सप्ताह के व्रत-त्योहार 27 अगस्त से 02 सितंबर 2024

27 अगस्त (मंगलवार) : भाद्रपद कृष्ण नवमी रात्रि 01.34 मिनट तक। श्री गुग्गा नवमी। गोकुलाष्टमी। नंदोत्सव।

28 अगस्त (बुधवार) : भाद्रपद कृष्ण दशमी रात्रि 01.20 मिनट तक। भद्रा दोपहर 01.27 मिनट से रात्रि 01.20 मिनट तक।

29 अगस्त (गुरुवार) : भाद्रपद कृष्ण एकादशी रात्रि 01.38 मिनट तक। अजा एकादशी व्रत।

30 अगस्त (शुक्रवार) : भाद्रपद कृष्ण द्वादशी रात्रि 02.26 मिनट तक। वत्स द्वादशी।

31 अगस्त (शनिवार) : भाद्रपद कृष्ण त्रयोदशी रात्रि 03.41 मिनट तक। भद्रा रात्रि 03.41 मिनट से। शनि प्रदोष व्रत। कैलाश यात्रा प्रारंभ। गंडमूल सायं 07.40 मिनट से।

01 सितंबर (रविवार) : भाद्रपद कृष्ण चतुर्दशी रात्रि 05.22 मिनट (सूर्योदय पूर्व) तक। सितंबर मास प्रारंभ। मासशिवरात्रि व्रत। अघोरा चतुर्दशी।

02 सितंबर (सोमवार) : भाद्रपद कृष्ण अमावस्या (दिन-रात)। कुशाग्रहणी अमावस्या। सोमवती अमावस्या। पिठोरी अमावस्या। पितृकार्येषु अमावस्या। गंडमूल रात्रि 12.20 मिनट तक।

पं. ऋभुकांत गोस्वामी

राग-द्वेष के बंधन से मुक्त, चित्त की शुद्धता ही धर्म का सार है

विचार

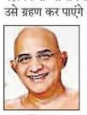

धर्म के सार को समझे बिना धर्म का ठीक से पालन नहीं किया जा सकता है। सार को समझेंगे तभी उसे ग्रहण कर पाएंगे अन्यथा अंदर के सार तत्त्व को छोड़कर छिलकों में ही उलझे रह जाएंगे। सार में सदा समानता रहती है। अनेक रूप-रूपाय भिन्न-भिन्न बाह्याडंबर, आकार-प्रकार, बनावट-सजावट, खान-पान जो भिन्न-भिन्न संप्रदायों के प्रतीक मात्र थे, वे आज भिन्न-भिन्न धर्म बनकर पारस्परिक विरोध का कारण बन गए हैं। सारा मानव समाज इन बाह्याचार और बाह्याडंबर रूपी स्थूल छिलकों में बुरी तरह उलझ गया है। हमें जब तक धर्म की वास्तविक 'मणि' प्राप्त नहीं होती, तब तक हम कंगाल हैं। हमारा जीवन निस्सार दिखावों, निरर्थक कर्मकांडों और निकम्मे बुद्धि-किलोलो में भरा रहता है। धर्म का सार तो चित्त की शुद्धता में है, राग-द्वेष-मोह के बंधनों से मुक्त होने में है। विषम स्थितियों में भी चित्त की समता बनाए रखने में है। मैत्री, करुणा, मुदिता में है। साथ-साथ जो यह भी समझते हो कि ये गुण हममें नहीं है तो देर-सवेर वे भी धर्म के सार को प्राप्त कर ही लेते हैं। लेकिन जब हम बाह्याडंबर के निस्सार छिलकों को ही धर्म मानने लगते हैं, तब शुद्ध धर्म प्राप्त कर सकने की सारी संभावनाओं को खो देते हैं। हम यह जांच कभी करते ही नहीं हैं कि जिसे हम धर्म माने जा रहे हैं, उसकी वजह से हमारे मन-मानस में क्या सुधार हो रहा है? अथवा हमारे जीवन-व्यवहार में कुछ सुधार हो रहा है? अतः धर्म की शुद्धता को जानना, समझना, जांचना, परखना पहला आवश्यक चरण है।

उपाध्याय गुप्तिसागर मुनि

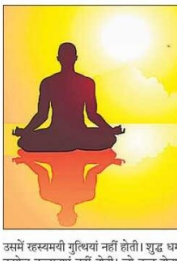

शुद्ध धर्म सदा स्पष्ट और सुबोधक होता है। उसमें रहस्यमयी गुत्थियां नहीं होती। शुद्ध धर्म में कपोल कल्पनाएं नहीं होती। जो कुछ होता है, यथार्थ ही होता है। धर्म कोरे सिद्धांत निरूपण के लिए नहीं प्रत्युत स्वयं का साक्षात्कार करने के लिए होता है। धर्म राजमार्ग की तरह ऋजु है, उसमें भूल-भुलैया नहीं होती। धर्म आदि, मध्य और अंत हर अवस्था में कल्याणकारी ही होता है। मिश्री की तरह, जहां से चखो, मुंह मीठा ही करेगा। यदि ऐसा हो तो धर्म यथार्थ है, शुक्ल है, शुद्ध है अन्यथा धर्म के नाम पर कोई धोखा हो सकता है।

अतएव यदि शुद्ध धर्म का सार ग्रहण नहीं करेंगे तो द्वेष, द्रोह, दुराग्रह, हठधर्मी, पक्षपात, संकीर्णता, कट्टरता, भय, आशंका, अविश्वास, प्रमाद, कठमुल्लेपन से भरा हुआ जीवन निस्तेज, निष्प्राण, निरुत्साही ही होगा। कुत्सित, कलुषित, कुटिल ही होगा। शुद्ध धर्म का सार ग्रहण कर लेंगे तो प्यार, करुणा, स्नेह, सद्भाव, त्याग, बलिदान, सहयोग, सहकार, श्रद्धा-विश्वास, अभ्युदय और विकास से भरा हुआ जीवन ओजस्वी, वर्चस्वी ही होगा। शुद्ध धर्म के यही प्रत्यक्ष लाभ हैं। प्रत्यक्ष लाभ ही शुद्ध धर्म की सच्ची कसौटी है। इस धर्म तरु पर सर्वेंद्रिय सुख रूपी फलों के साथ-साथ मुक्ति रूपी महाफल फलता है।

रोजनामचा

पं. राघवेन्द्र शर्मा
ज्योतिषाचार्य

मेष : वाणी में मधुरता रहेगी। कारोबार में भागदौड़ अधिक रहेगी। लाभ के अवसर भी मिलेंगे। कुटुंब-परिवार में मान-सम्मान की प्राप्ति होगी। सेहत का ध्यान रखें।

वृष : मन में शांति व प्रसन्नता रहेगी। फिर भी बातचीत में संतुलित रहें। जीवनसाथी की सेहत का ध्यान रखें। माता-पिता का साथ रहेगा। कारोबार में व्यस्तता बढ़ेगी।

मिथुन : मन परेशान रहेगा। संयत रहें। क्रोध से बचें। वाणी के प्रभाव में वृद्धि होगी। कारोबार में सुधार होगा। जीवनसाथी की सेहत का ध्यान रखें। आय में वृद्धि होगी।

कर्क : आत्मविश्वास तो भरपूर रहेगा, परंतु परिवार की सेहत का ध्यान रखें। नौकरी में बदलाव की संभावना बन रही है। भागदौड़ बढ़ेगी। खर्चों में वृद्धि होगी।

सिंह : आत्मसंयत रहें। क्रोध के अतिरेक से बचें। बातचीत में संयत रहें। शैक्षिक कार्यों में सफलता मिलेगी। मान-सम्मान की प्राप्ति होगी। वस्त्र उपहार में मिलेंगे।

कन्या : संयत रहें। व्यर्थ के क्रोध से बचें। नौकरी में तरक्की की प्राप्ति होगी। शासन सत्ता का सहयोग मिलेगा। आय में वृद्धि होगी। परिवार में सुख-शांति रहेगी।

तुला : मन अशांत रहेगा। आत्मविश्वास में कमी रहेगी। सेहत का ध्यान रखें। भागदौड़ अधिक रहेगी। वाहन के रख-रखाव तथा वस्त्रों आदि पर खर्च बढ़ सकते हैं।

वृश्चिक : मन परेशान रहेगा। आत्मविश्वास में कमी रहेगी। बातचीत में संयत रहें। शैक्षिक कार्यों में सफल रहेंगे। मान-सम्मान की प्राप्ति होगी। सेहत का ध्यान रखें।

धनु : संयत रहें। धैर्यशीलता बनाए रखें। नौकरी में अफसरों से सहयोग बनाकर रखें। तरक्की के योग बन रहे हैं। कार्यक्षेत्र में बदलाव हो सकता है।

मकर : मन प्रसन्न रहेगा। संतान सुख में वृद्धि होगी। शैक्षिक कार्यों में सफलता मिलेगी। मान-सम्मान की प्राप्ति होगी। माता की सेहत का ध्यान रखें। खर्च बढ़ेंगे।

कुंभ : धैर्यशीलता बनाए रखें। संयत रहें। अपनी भावनाओं को वश में रखें। संतान की सेहत के प्रति सचेत रहें। भागदौड़ अधिक रहेगी। रहन-सहन अव्यवस्थित रहेगा।

मीन : मन में उतार-चढ़ाव रहेंगे। परिवार का साथ मिलेगा। कारोबार में सुधार होगा। कारोबार के लिए विदेश यात्रा से लाभ के अवसर मिलेंगे। मित्रों का साथ मिलेगा।

स्कैन करें
भविष्यफल और व्रत-त्योहार जानने के लिए

व्रत और त्योहार | पंचांग | पं. ऋभुकांत गोस्वामी

27 अगस्त, मंगलवार, **शक संवत्**: 05 भाद्रपद (सौर) 1946, **पंजाब पंचांग**: 12 भाद्रपद मास प्रविष्टे 2081, **इस्लाम**: 21 सफर सन् 1446, **विक्रमी संवत्**: भाद्रपद कृष्ण नवमी रात्रि 01.34 मिनट तक। वज्र योग, तैतिल करण। चंद्रमा वृष राशि में रात्रि 03.42 मिनट तक उपरांत मिथुन राशि में।

सूर्य दक्षिणायन। सूर्य उत्तर गोल। शरद् ऋतु। अपराह्न 03 बजे से सायं 04.30 मिनट तक राहुकालम्। श्री गुग्गा नवमी। गोकुलाष्टमी। नंदोत्सव।

वास्तु सलाह | आचार्य मुकुल रस्तोगी

हमारे घर में ईशान कोण में अलमारियां बनी हुई हैं। हम उन्हें हटा भी नहीं सकते। क्या उपाय करें?
-रश्मि सक्सेना, बरेली

- आप उन अलमारियों के दरवाजों पर शीशा लगा दें। यह शीशा आप हर किवाड़ पर या पहले और अंतिम पल्ले पर भी लगा सकते हैं। उनके ऊपर नीले रंग का कागज लगा दें या फिर हल्का नीला पेंट करवा दें। अलमारियां छत तक लगी हुई न बनाएं। उनमें कम-से-कम एक फिट ऊपर से खुला रखें। आप अलमारियों के ऊपर चमकती हुई माइका भी लगा सकते हैं। अलमारी भारी न बनवाकर हल्के मैटीरियल से बनवाएं। अलमारियों के अंदर हल्का सामान रखें। भारी सामान नहीं रखें।

वर्ग पहेली : 7707

बाएं से दाएं

1. घटाना; निकालना (2,3)
3. अवलंब; आधार; सहारा; भरोसा; शरण (3)
6. ताकत देनेवाला; बल देनेवाला; शक्तिदायक (5)
7. इच्छा; मन के भाव; वृत्ति (4)
9. रचना करने की अवधि; लिखने का समय (5)
13. कृपा; दया (4)
14. बचत करने की योजना; बचत का प्रमाण-पत्र; बचत की रसीद (5)
15. आस्वादन; नमूना; पूर्व झलक; प्रथम प्रयोग (3)
16. अपनत्व; आत्माभिमान; आत्मीयता; स्वजन भावना (5)

ऊपर से नीचे

1. कमल के समान सुंदर हाथ (5)
2. एकाध बार; कभी-कभी; किसी-न-किसी समय; यदा-कदा (2,3)
4. सहयोगी; सहायता करनेवाला; मददगार (4)
5. जिसका आकार बेलन जैसा हो; गोलाकार (5)
8. नियत समय पर भुगतान करने का प्रतिज्ञा-पत्र (5)
10. पनपना; हरा-भरा होना; हृष्ट-पुष्ट होना; प्रसन्न होना; प्रस्फुटित होना (5)
11. अचेत; बेहोश; संज्ञाहीन; सुधहीन (5)
12. बच्चों की सी चंचलता; बालपन; बाल्यावस्था (4)

हरीश चन्द्र सन्सी, विविधा विधा, दिल्ली
(उत्तर अगले अंक में)

वर्ग पहेली 7706 का उत्तर

■	1चु	2प	चा	3प	■	4प	■	5प
6जा	■	र	■	7ह	म	स	फ	र
8न	शा	च	ढ़	ना	■	र	■	लो
प	■	म	■	9ना	10दे	ना	■	क
11र	ज	■	12पा	■	ल	■	13मे	सि
आ	■	14कै	स	15कै	■	16कं	■	धा
ब	■	त	■	17म	द	द	गा	र
18न	का	रा	त्म	क	■	मू	■	ना
ना	■	ना	■	19स	र	ल	ता	■

सुडोकू : 7690

*कठिन

					7		8	
		6				2	5	4
			8				9	6
		4		5				7
			7		1			
3				9		6		
4	5				9			
2	3	9				1		
	6		3					

खेलने का तरीका : दिमागी खेल और नंबरों की पहेली है यह। ऊपर नौ-नौ खानों के नौ खाने दिए गए हैं। आपको 1 से 9 की संख्याएं इस तरह लिखनी हैं कि खड़ी और पड़ी लाइनों के हरेक खाने में 1 से 9 की सभी संख्याएं आएं। साथ ही 3x3 के हरेक बक्से में भी 1 से 9 तक की संख्याएं हों। पहेली का हल हम कल देंगे।

हल : सुडोकू नं.7689

1	3	8	2	5	6	7	4	9
7	4	5	1	9	8	6	2	3
6	2	9	4	3	7	8	1	5
3	9	2	7	8	5	1	6	4
4	6	1	9	2	3	5	8	7
5	8	7	6	4	1	3	9	2
9	7	3	8	1	2	4	5	6
2	1	6	5	7	4	9	3	8
8	5	4	3	6	9	2	7	1

प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

युद्ध जीतना पर्याप्त नहीं है, बल्कि शांति स्थापित करना अधिक महत्वपूर्ण है। -अरस्तू

रूस-यूक्रेन हों या इस्राइल-हिजबुल्ला, पिछले कुछ समय से जिस तरह से इन युद्धों की गति तेज हुई है, उससे यही प्रतीत होता है कि चीजें शांत होना तो दूर, खतरनाक मोड़ लेती दिख रही हैं। ऐसे में, युद्धरत राष्ट्रों को व्यावहारिक दृष्टि अपनाते हुए समझना होगा कि युद्ध का समाधान बातचीत से ही संभव है।

युद्ध और शांति

यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की शांति के दूसरे शिखर सम्मेलन के प्रति बेशक उत्साह दिखा रहे हैं, लेकिन प्रधानमंत्री मोदी की यूक्रेन यात्रा के तीन दिनों के भीतर यूक्रेन का रूस के सारातोव में एक ड्रोन द्वारा रिहायशी इमारत पर कथित हमला और बदले में रूस द्वारा यूक्रेन के तमाम शहरों में मिसाइलें दागना, तो दूसरी ओर इस्राइल और हिजबुल्ला के बीच पिछले कुछ समय से युद्ध तेज होने से यही प्रतीत होता है कि हालात शांत होना तो दूर, ये वैश्विक युद्ध खतरनाक मोड़ लेते जा रहे हैं। उल्लेखनीय है कि पिछले करीब बीस दिनों से यूक्रेन रूस के भीतर घुसकर हमले कर रहा है, जो पिछले ढाई वर्षों से चल रहे रूस-यूक्रेन युद्ध में पहली बार ही देखा गया है। रूस की इमारत पर हुए ड्रोन हमले की तीव्रता बेशक कम थी, लेकिन इसने तेईस साल पहले अमेरिका के वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर हुए आतंकी हमले की याद जरूर ताजा की है। दूसरे विश्वयुद्ध के बाद यह भी पहली बार है, जब रूस की जमीन के किसी हिस्से पर किसी दूसरे देश ने कब्जा किया हो। हालांकि कई विशेषज्ञ इसके पीछे रूस की दूसरे विश्वयुद्ध में अपनाई गई रणनीति को देख रहे हैं, जिसके तहत वह पहले दुश्मन को अंदर आने का मौका देता है और फिर घेरकर मारता है। मूल रूप से एक क्षेत्रीय संघर्ष के रूप में शुरू हुआ रूस-यूक्रेन युद्ध अब निस्संदेह वैश्विक शक्ति संघर्ष में बदल गया है, जिसने न केवल यूरोप के स्थायित्व को खतरे में डाला है, बल्कि पूरी दुनिया में ऊर्जा और खाद्य सुरक्षा को भी गंभीर आघात पहुंचाया है। नाटो व दूसरी वैश्विक शक्तियों का हस्तक्षेप इस आग को और भड़का रहा है, जिससे यह युद्ध और भी भयानक रूप ले रहा है। दूसरी ओर, बंधकों को बचाने में नाकाम रहने पर अपने ही देश के लोगों की नाराजगी झेल रही नेतन्याहू सरकार ने दो दिन पहले दक्षिणी लेबनान में हिजबुल्ला के ठिकानों पर हमले किए, तो हिजबुल्ला ने भी बदले में इतना तगड़ा जवाबी हमला किया कि इस्राइल को दो दिनों के लिए आपातकाल की घोषणा करनी पड़ी है। जाहिर है कि इस्राइल की सैन्य कार्रवाई और हिजबुल्ला के जवाबी हमलों ने इस क्षेत्र में शांति और अस्थिरता के लिए गंभीर खतरे तो पैदा किए ही हैं, पहले से अस्थिर पश्चिम एशिया को और भी अशांत कर दिया है। जाहिर है कि अगर ये युद्ध जल्दी नहीं रुके, तो पूरे विश्व को तीसरे महायुद्ध की ओर धकेल सकते हैं। ऐसे में, युद्धरत राष्ट्रों को समझना होगा, जैसा भारत कहता भी आया है कि युद्ध का समाधान बातचीत से ही संभव है।

अतीत के प्रतीकों का साया

महाराष्ट्र का चुनाव भाजपा के लिए निर्णायक है। नमो शेतकरी महासम्मान निधि और लड़की बहिन नकद हस्तांतरण योजना को लेकर चर्चा है और इससे पार्टी की स्वीकार्यता बढ़ी है, लेकिन भाजपा के सामने जो चुनौतियां खड़ी हैं, उनसे उसे खुद ही निपटना होगा।

शंकर अय्यर
वरिष्ठ पत्रकार

यह वर्ष 2014 के महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव से पहले का समय था। भाजपा के चुनाव अभियान का प्रमुख चेहरा देवेंद्र फडणवीस एक समाचार चैनल द्वारा आयोजित सम्मेलन में मंच पर थे। उनके पीछे लगी एक बड़ी स्क्रीन पर अब मशहूर हो चुकी वह वीडियो क्लिप चल रही थी, जिसमें फडणवीस कह रहे थे कि 'जब भाजपा सत्ता में आएगी, तो अजीत दादा चक्की पीसिंग, पीसिंग ऐंड पीसिंग।' यह बॉलीवुड और राजनीति का शानदार मिश्रण था। मैंने फडणवीस से पूछा कि क्या उन्होंने *शोले* देखी है, जिसमें वीरू और बसंती की सगाई हो जाती है। यह पूछने पर कि यदि राकांपा के समर्थन की जरूरत पड़ेगी, तो क्या होगा, फडणवीस ने हंसते हुए कहा था कि इससे बेहतर सत्ता से अलग रहना ही होगा। तबसे यह वीडियो वायरल हो रहा है और यह उस अतीत का प्रतीक बन गया है, जिसका साया महाराष्ट्र में भाजपा के भविष्य पर पड़ रहा है।

इस महीने चुनाव आयोग ने हरियाणा और जम्मू एवं कश्मीर के चुनाव की तारीखों की घोषणा की। लेकिन लोगों का ध्यान महाराष्ट्र पर लगा है, क्योंकि इसे राष्ट्रीय राजनीति में वर्चस्व का मार्ग माना जाता है। पिछले एक दशक की भाजपा की यात्रा अल्पकालिक फायदे देखने की प्रवृत्ति के खतरों को दर्शाती है। पार्टी ने भ्रष्टाचार-विरोधी मुद्दों को छोड़ दिया, सहयोगी दलों के बीच अविश्वास की भावना पैदा की, तोड़-फोड़ की राजनीति करके अपनी विश्वसनीयता खोई, नतीजतन उसे अवसरवादी राजनीति करने का आरोप झेलना पड़ा।

वर्ष 2014 में भाजपा का सफल अभियान व्यक्तित्व और वादे के इर्द-गिर्द बुना गया था। नारा दिया गया था-दिल्ली में नरेंद्र, मुंबई में देवेंद्र। फडणवीस मिलनसार थे, लेकिन अपने दृष्टिकोण में आक्रामक एवं कट्टर थे। वर्ष 2012 में मंत्रालय में आग लगने के बाद उन्होंने तत्कालीन मुख्यमंत्री के खिलाफ एफआईआर दर्ज करने के लिए याचिका दायर की थी। वर्ष 2014 से 2019 के बीच फडणवीस ने अपनी शानदार छवि बनाई थी। पर लगता है कि अब उनकी वह छवि खो गई है। 2024 में फडणवीस पार्टी के भीतर ही अक्सर युद्ध की स्थिति में नजर आते हैं।

भाजपा की सफलता के मूल में राज्य को भ्रष्टाचार मुक्त करने का वादा था, जिसे कांग्रेस-राकांपा गठबंधन पर 11 लाख करोड़ रुपये के घोटाले के आरोप पत्र द्वारा रेखांकित किया गया था। अक्तूबर, 2014 में भाजपा ने शिवसेना के साथ मिलकर 288 सीटों में से क्रमशः 122 और 63 सीटें जीतकर घर वापसी की थी। सत्ता में आने के तुरंत बाद फडणवीस सरकार ने राज्य के भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो को राकांपा के अजीत पवार और सुनील तटकरे के खिलाफ जांच की मंजूरी दी। एक दशक बाद, फडणवीस और अजीत पवार उपमुख्यमंत्री हैं और 2024 के चुनावों के लिए साथ-साथ प्रचार कर रहे हैं। राजनीति में रिश्ते ही सफलता को परिभाषित करते हैं और भाषा मायने रखती है। एक चौथाई सदी तक भगवा गठबंधन में भाजपा और शिवसेना सहयोगी थे। शिवसेना प्रमुख बाल ठाकरे द्वारा घरेलू कलह कहे जाने के बावजूद गठबंधन चलता रहा। मगर वर्ष 2019 के चुनाव के बाद मुख्यमंत्री पद की लड़ाई को लेकर गठबंधन खत्म हो गया। सरकार का गठन रुका हुआ था। अंततः उद्धव ठाकरे गठबंधन से बाहर चले गए और गठबंधन टूट गया।

भाजपा खुद को अलग तरह की पार्टी बताती रही है। 105 विधायकों के साथ वह विपक्ष को मात दे सकती थी, लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। जैसे कॉरपोरेट कंपनियां किसी शत्रु कंपनी को अधिग्रहीत कर लेती हैं, ठीक वैसे ही भाजपा ने सरकार बनाने के लिए 23 नवंबर, 2019 को अजीत पवार को अपने खेमे में मिला लिया। राकांपा प्रमुख शरद पवार ने तुरंत अपने भतीजे के भाजपा में शामिल होने को अवैध बताया और शिवसेना-उद्धव, राकांपा-पवार और कांग्रेस को मिलाकर महा विकास अघाड़ी (एमवीए) का गठन किया और उद्धव को मुख्यमंत्री नामित किया। अजीत पवार के साथ भाजपा का तात्कालिक गठजोड़ तीन दिन भी नहीं टिक पाया और अजीत पवार अपने सहयोगियों के साथ एमवीए सरकार में शामिल हो गए।

वर्ष 2022 में एमवीए अपने अंतर्विरोधों के बोझ तले ढहने के करीब दिखा, जब भाजपा ने एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाले शिवसेना गुट के साथ साझेदारी करके एमवीए सरकार को गिरा दिया। विपक्ष ने आरोप लगाया कि केंद्रीय एजेंसियों का डर दिखा कर पार्टी तोड़ी गई। जबकि भाजपा ने खुद को निर्दोष बताया और शिंदे गुट ने कहा कि यह विभाजन नहीं था। फडणवीस को उपमुख्यमंत्री के रूप में सरकार में शामिल होने का निर्देश मिलने पर बदनामी झेलनी पड़ी। जुलाई, 2023 में भाजपा ने फिर से अपनी पुरानी योजना पर विचार करते हुए अजीत पवार गुट को सरकार में शामिल कर लिया। ऐसा निश्चित रूप से सामाजिक गठबंधनों और ग्रामीण महाराष्ट्र में चुनावी सफलता के लिए किया गया। हालांकि जून, 2024 में हुए लोकसभा चुनाव में इसका कोई फायदा नहीं हुआ, बल्कि पार्टी की रणनीति पर ही असर पड़ा।

राजनीति के उलझने के साथ ही राज्य की अर्थव्यवस्था को झटका लगा। अतीत के विपरीत, राज्य 7.6 प्रतिशत की धीमी गति से विकास कर रहा है, जबकि भारत की जीडीपी वृद्धि दर 8.2 प्रतिशत है। महाराष्ट्र का कर्ज बढ़कर 7.11 लाख करोड़ रुपये (राज्य जीडीपी का 17.6 फीसदी) हो गया है। 48,578 करोड़ रुपये का ब्याज भुगतान राजस्व का 10 प्रतिशत है। 2014 में किसानों के समर्थन से भाजपा को सफलता मिली थी, लेकिन 2024 में किसान भाजपा के खिलाफ उग्र हो रहे हैं। सामाजिक प्रतिष्ठा घटने को लेकर मराठाओं में गुस्सा है, लेकिन यह खेती की अव्यवहारिकता का भी प्रतीक है- शुद्ध बुआई का क्षेत्र घट रहा है और सकल फसल क्षेत्र स्थिर है। राज्य निवेश में पिछड़ रहा है और इसकी प्रति व्यक्ति आय 2.52 लाख रुपये है, जो सात राज्यों-सिक्किम, तेलंगाना, दिल्ली, हरियाणा, कर्नाटक और तमिलनाडु से पीछे है।

यह भाजपा के लिए निर्णायक चुनाव है। हां, नमो शेतकरी महासम्मान निधि और लड़की बहिन नकद हस्तांतरण योजना को लेकर चर्चा है और इससे पार्टी की स्वीकार्यता बढ़ी है, लेकिन चुनौती कठिन है। अहंकार और हताशा, एक के बाद एक गलत कदम उठाने और रणनीतिक के बजाय सामरिक विकल्प ने पार्टी को एक ऐसे दलदल में फंसा दिया है, जिससे उसे खुद को बाहर निकालना होगा।

edit@amarujala.com

जीवन धारा

जॉर्ज ऑरवेल

हमें सोचना चाहिए। रुढ़िवादिता का अर्थ है न सोचना। रुढ़िवादिता अचेतनता है। मानव जाति के लिए स्वतंत्रता और खुशी के बीच चुनाव करना कठिन है और अधिकांश मानव जाति के लिए खुशी बेहतर है।

स्वतंत्रता और खुशी के बीच चुनाव करना कठिन है

ट्रेन मुझे लावा के ढेर, चिमनियों, लोहे के ढेर, गंदी नहरों, राख से भरे कीचड़ के रास्तों के बीच से ले जा रही थी। जब हम शहर के बाहरी इलाकों से धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे, तो तटबंध के समकोण पर बनी छोटी-छोटी झुग्गी-झोपड़ियों की कतारों से गुजरे। एक घर के पीछे एक युवती पत्थरों पर घुटनों के बल बैठी थी और पाइप में एक छड़ी डाल रही थी, जो अंदर के सिंक से निकल रही थी और मुझे लगता है कि वह उसके घर से पानी निकासी का एकमात्र रास्ता था। झुग्गी-झोपड़ी की लड़की पच्चीस साल की है, लेकिन मूलभूत सुविधाओं की भारी कमी के कारण चालीस की दिखती है।

तभी एक भिखारी मेरे सामने वाली सीट से खाने के लिए कुछ मांग रहा था। भिखारियों की सामाजिक स्थिति के बारे में कुछ कहना उचित है, क्योंकि जब कोई उनके साथ रहता है और पाता है कि वे भी सामान्य मनुष्य हैं, तो समाज उनके प्रति जो अजीब रवैया अपनाता है, उससे वह हैरान हुए बिना नहीं रह सकता। लोगों को लगता है कि भिखारियों और सामान्य 'कामकाजी' लोगों के बीच कुछ बुनियादी अंतर है। वे एक अलग जाति हैं-अपराधी और वेश्याओं की तरह बहिष्कृत। काम करने वाले लोग 'काम' करते हैं, भिखारी 'काम' नहीं करते, वे परजीवी हैं, बेकार हैं। यह मान लिया जाता है कि एक भिखारी अपनी जीविका 'नहीं कमाता' है, जैसे एक राजमिस्त्री या साहित्यिक आलोचक अपनी जीविका 'कमाता' है। यह मात्र सामाजिक बहिष्कार है, जिसे सहन किया जाता है, क्योंकि हम एक मानवीय युग में रहते हैं, लेकिन अनिवार्य रूप से घृणित है। वह लड़का जो भीख मांग रहा था, वह मेरे पास आया। मैंने उसे फल देते हुए पूछा, तुम्हें क्या पसंद है? वह बोला, मुझे काम करना पसंद है, लेकिन मैं सबसे पहले भीख मांगने की आदत छोड़ना चाहता हूं। मैंने कहा, तुम जो चाहो, वह कर सकते हो, क्योंकि मनुष्य ही एकमात्र ऐसा प्राणी है, जो उत्पादन किए बिना उपभोग करता है। वह दूध नहीं देता, वह अंडे नहीं देता, वह हल खींचने के लिए बहुत कमजोर है, वह खरगोशों को पकड़ने के लिए पर्याप्त तेज नहीं दौड़ सकता। फिर भी वह सभी जानवरों का स्वामी है। वह उन्हें काम पर लगाता है, उन्हें उतना ही खाने को देता है, जिससे वे भूखे न मरें, और बाकी खुद के लिए रख लेता है। हमें सोचना चाहिए। रूढ़िवादिता का अर्थ है न सोचना। रूढ़िवादिता अचेतनता है। मानव जाति के लिए स्वतंत्रता और खुशी के बीच चुनाव करना कठिन है और अधिकांश मानव जाति के लिए खुशी बेहतर है। हमारा सबसे बड़ा दुश्मन, हमारा अपना तंत्रिका तंत्र है। किसी भी क्षण हमारे अंदर का तनाव किसी न किसी दृश्य लक्षण में तब्दील हो सकता है। एक समय ऐसा आता है, हम सभी ऐसी बातों पर विश्वास करने लगते हैं, जिनके बारे में हम जानते हैं कि वे झूठ हैं, और फिर, जब अंततः हम गलत साबित होते हैं, तो हम तथ्यों को तोड़-मरोड़ कर यह दिखाने की कोशिश करते हैं कि हम सही थे।

विश्वास करने से पहले सोचें

सूत्र

हमें प्रत्यक्ष रूप में जो भी दिखाई देता है, जरूरी नहीं कि वास्तव में वह वैसा ही हो। कुछ चीजों के बारे में यह जानते हुए भी कि वे झूठ हैं, हम किसी कारणवश उन पर विश्वास करने लगते हैं। लेकिन ऐसी गलतफहमी से बचने के लिए हमें स्वतंत्र रूप से सोचना चाहिए। अगर हम नहीं सोचते हैं, तो रूढ़िवादिता हम पर हावी हो जाएगी।

दूसरा पहलू

जेम्स प्रिंसेप ने सांची व भरहुत के अभिलेखों में 'दानं' शब्द को पहचाना, तो इस लिपि को पढ़ने की कोशिश की।

वह विदेशी, जिसने हमारी लिपियों को पढ़ा

जेम्स प्रिंसेप की नियुक्ति ईस्ट इंडिया कंपनी में 1819 में कोलकाता (तब कलकत्ता) टकसाल में हुई थी। एक साल बाद उन्हें बनारस टकसाल भेज दिया गया। वह 1830 तक बनारस में रहे। पुराने समय के सिक्के देखते हुए उन्होंने पाया कि उन पर अलग-अलग लिपियों में कुछ लिखा है। यह जानने के लिए उन पर क्या लिखा है, उन्होंने लिपियों को समझने की कोशिश की। उन्होंने अपने अध्ययन का विस्तार किया और कई अभिलेख देखे, तो पाया कि सांची और भरहुत के अभिलेखों के अंत में प्रायः एक ही तरह के अक्षर खुदे हैं। उन्होंने इसे 'दानं' के रूप में पढ़ने की कोशिश की।

जेम्स प्रिंसेप

जेम्स प्रिंसेप ने ब्राह्मी के अलावा सिक्कों पर अंकित खरोष्ठी के अक्षर भी पढ़े, जिससे उन सिक्कों को जारी करने वाले शासकों के नाम भी सामने आए।

यदि ब्राह्मी और खरोष्ठी लिपि न पढ़ी गई होती, तो न तो हम अशोक के बारे में जानते और न ही उनके शासन की कोई प्रामाणिक जानकारी मिल पाती।

यहीं से उनकी रुचि अभिलेख पढ़ने की ओर हुई। तब तक एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल की स्थापना हो चुकी थी और वह उसके सचिव बनाए गए। उन्हें सोसायटी के जर्नल का संपादक भी बनाया गया। उनके पास तरह-तरह के अभिलेखों की प्रतियां आने लगीं, जिन्हें पढ़ने की जिम्मेदारी भी उन्हीं की थी। जब उन्होंने सांची और भरहुत के अभिलेखों में 'दानं' शब्द को पहचाना, तो इसी के सहारे लिपि को पढ़ने की कोशिश, जिसमें उन्हें सफलता भी मिली।

उन्हें अनेक अभिलेखों में 'देवानाम पियदसि' शब्द मिला। पहले उन्होंने समझा कि यह श्रीलंका के किसी राजा का नाम है, क्योंकि वहां मिले अभिलेखों में भी यह नाम बार-बार आ रहा था। लेकिन बाद में उन्होंने पाया कि यह तो अशोक के लिए प्रयुक्त विशेषण है। भारत में मिले अभिलेखों में भी यह विशेषण पाया गया। जहां-जहां अभिलेख मिले, वहां तक अशोक के राज्य की सीमा तय की गई। जिस लिपि में अशोक ने अपने लेख लिखवाए थे, उसे धम्मलिपि कहा जाता था, लेकिन बाद में इसे ब्राह्मी का नाम दिया गया। अब तो अशोक और उसके बाद की पूरी ब्राह्मी लिपि पढ़ ली गई है। जैसे-जैसे उसमें बदलाव आए, वह भी स्पष्ट हो गया है। इसी से देवनागरी विकसित हुई। लेकिन जेम्स प्रिंसेप ब्राह्मी पढ़कर ही नहीं रुके। उन्होंने सिक्कों पर खुदे खरोष्ठी के अक्षर भी पढ़े और इससे उन सिक्कों को जारी करने वाले शासकों के नाम भी सामने आए। यदि ब्राह्मी और खरोष्ठी लिपि न पढ़ी गई होती, तो न तो हम अशोक के बारे में जानते और न ही उनके शासन के विस्तार के बारे में ही कोई प्रामाणिक जानकारी मिल पाती। इसलिए भारत का इतिहास जेम्स प्रिंसेप का हमेशा ऋणी रहेगा। यही नहीं, उन्होंने बनारस के कई लिथोग्राफ चित्र भी बनाए, जो आज किसी अमूल्य धरोहर से कम नहीं हैं। बनारस की ड्रेनेज सुधारने का काम भी उन्होंने ही किया। *-रामधनी द्विवेदी*

आंकड़े

कर संग्रह

पिछले कुछ वर्षों से कर संग्रह प्रतिवर्ष बढ़ रहा है। 2015-16 से 2023-24 के बीच संग्रह में 47 हजार करोड़ रुपये की वृद्धि हुई है।

2015-16	17,759.12
2018-19	25,145.19
2021-22	33,907.71
2022-23	48,028.19
2023-24	64,809.86

आंकड़े करोड़ रुपये में। | स्रोत: MoRTH व News Reports

हमें जो भी मिलता है, वह इस संसार से ही। अतः इस संसार के कल्याण के लिए उसका सदुपयोग करते रहना चाहिए। दोष धन कमाने में नहीं, उसके उपयोग में है।

सदुपयोग करना सीखें

अंतर्यात्रा
संकलित

एक बार एक सेठ रामकृष्ण परमहंस से मिलने आया। वह बहुत धनी था, लेकिन खुश नहीं था। उसके परिवार में हमेशा कोई न कोई बीमार रहता था। स्वामी जी से जब उसने अपनी परेशानी बताई, तो स्वामी जी ने कहा, तुम निष्काम कर्म करो, जहां कर्म निष्काम होते हैं, वहां परिणाम अच्छे मिलते हैं। उसने कहा, मैं रोजगार के कामों में इतना व्यस्त रहता हूं कि मंदिर जाने का समय नहीं निकाल पाता।

स्वामी जी ने कहा, रोजगार करना और मंदिर जाना, दोनों कर्म हैं। तुम अच्छे कर्म करते रहो और उसे ईश्वर को समर्पित कर दो। दोष धन कमाने में नहीं है, उसके उपयोग में है। जब तुम अपने धन को तिजोरी में बंद कर देते हो, तो उसका मार्ग बंद हो जाता है। संसार में हर चीज गतिमान है। ज्ञान, धर्म, धन, सभी को बांटते रहना चाहिए। ज्ञानी को चाहिए कि वह अपना ज्ञान स्वयं तक सीमित न रखे, दूसरों को भी दे। संतों को चाहिए कि वे धर्म का प्रसार करें और सभी के भीतर चैतन्य जाग्रत करें। इसी प्रकार धनी व्यक्ति को भी अपना धन दान-पुण्य और शुभ कार्यों में खर्च करते रहना चाहिए।

उन्होंने उसे समझाते हुए कहा, तुम्हारा धन कमाना गलत नहीं है, किंतु उसे सहेजते रहना गलत है। यदि तुम धन का सदुपयोग न करोगे, तो वह रोग-शोक आदि के माध्यम से स्वतः निकलता रहेगा और खर्च होता रहेगा।

अमर उजाला

पुराने पन्नों से — 01 मई, 1958

नेहरू से पद नहीं छोड़ने का अनुरोध करेगी कांग्रेस

श्री नेहरू से प्रधानमन्त्री पद छोड़ने का अनुरोध किया जाय

जवाहरलाल नेहरू की प्रधानमंत्री पद से अवकाश ग्रहण करने की इच्छा पर विचार करने के लिए होने वाली कांग्रेस की बैठक कल होगी। बैठक में कांग्रेस पार्टी के नेता नेहरू से प्रधानमंत्री बने रहने का अनुरोध करेंगे।

गांवों की खुशहाली का पैमाना अलग है

गांव के पंद्रह प्रतिशत धनी लोगों द्वारा उपभोग की जा रही वस्तुओं के आंकड़ों से गांवों की खुशहाली का अनुमान लगाना उचित नहीं है।

अखिलेश आर्येन्दु

मुद्दा

जो दिखावापन कभी शहरी जिंदगी का हिस्सा माना जाता था, वह अब गांवों में भी दिखने लगा है। गांव समाज में जैसे-जैसे दिखावा करने की आदत बढ़ रही है, वैसे-वैसे असली जीवन की मासूमियत भी गायब होती जा रही है। जीवन-शैली में आया यह बदलाव जहां बाजारवाद को बढ़ावा दे रहा है, वहीं पर कृषि आधारित भारतीय जीवन-शैली, जो स्वदेशी, शाकाहार, स्वावलंबन, स्वसंस्कृति पर आधारित रही है, को विकृत करता जा रहा है। गांवों की जीवन-शैली पर इस बाजारू व्यवस्था ने ऐसा असर डाला है कि अब लगता ही नहीं कि ये वही भारतीय गांव हैं, जहां इंसानियत का एक अलग रूप दिखाई पड़ता था। शहरीकरण की वजह से भाईचारा, खुशमिजाजी और हंसी के फुहारों में सराबोर चौपालों की शामें अब शायद ही किसी गांव में दिखाई पड़ें।

वैश्वीकरण के बाद पिछले 40 वर्षों से शहरों और गांवों में बाजारीकरण के कारण जो गैर-बराबरी बढ़ रही है, उसने गांवों के असली विकास पर सवाल पैदा कर दिया है। आज गांवों में जो विकास दिखता है, वह विकास नहीं, बल्कि बाजारीकरण की मजबूत होती पैठ है। यही उपभोक्तावाद है। एक सर्वेक्षण के मुताबिक, ग्रामीण इलाकों में पिछले 1993-94 से 2012 के दौरान उन ऐशो-आराम की वस्तुओं का उपभोग तेजी से बढ़ा, जो अमूमन शहरी अमीरों के पास हुआ करती थीं। मसलन, जिन गांवों में साइकिल या अपवाद स्वरूप मोटर साइकिल हुआ करती थी, वहां कारें दौड़ने लगी हैं। आंकड़ों के मुताबिक, 1993-94 से 2012 के बीच कार रखने वालों का प्रतिशत 12 से बढ़कर 40 हो गया। दोपहिया वाहनों की संख्या में पांच गुना से अधिक की बढ़ोतरी हुई। यानी गांवों में भी ऐशो-आराम की जिंदगी जीने वालों की संख्या पिछले एक दशक में तेजी से बढ़ी है। इससे यह धारणा बननी शुरू हो गई है कि उपभोग के मामले में गांव शहरों को पीछे छोड़ते जा रहे हैं।

लेकिन यह विकास गांवों में बाजार की घुसपैठ का नतीजा है। आंकड़ों की जादूगरी में मन को उलझा देने से असलियत दब जाएगी। इसलिए देखना यह है कि सर्वे रिपोर्ट किस मूल बात को प्रकट करने में चूक गई है। दरअसल, गांवों के असली हालात का सर्वे रिपोर्ट में खुलासा ही नहीं किया गया है। आज भी भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ कृषि ही है। गांवों में रहने वालों में 95 प्रतिशत लोग खेती से ही जीविकोपार्जन करते हैं। और इन खेती करने वालों में 85 फीसदी लोग सीमांत या छोटे किसान हैं। इन 85 प्रतिशत लोगों के पास दोपहिया वाहन नहीं हैं और कार खरीदने का तो सवाल ही नहीं उठता है। गांवों में जिनके पास चार पहिया या दोपहिया वाहन हैं, वे बड़े किसान कहे जाते हैं। यानी गांवों में जो उपभोग की वस्तुएं खरीदते हैं, उनकी तादाद 20 प्रतिशत से भी कम ही है। इसलिए पंद्रह प्रतिशत लोगों द्वारा उपभोग की जा रही वस्तुओं के आंकड़ों से गांवों की खुशहाली का अनुमान लगाना उचित नहीं है।

निश्चित रूप से गांव का गरीब अब आधुनिक विकास की दौड़ में शामिल होना चाहता है, लेकिन पैसे की कमी के चलते वह इस दौड़ में शामिल नहीं हो पा रहा है। बाजारीकरण के बाद निश्चित रूप से गांव की तस्वीर बदली है, लेकिन यदि विकास से इसे जोड़ा जाए, तो महज 20 प्रतिशत यानी बड़ी जोत वाले किसानों का विकास हुआ। गांव में बड़ी जोत वाले किसानों के पास ही संपत्ति, जायदाद और व्यापार की मोटी कमाई है। यानी मलाई वही वर्ग छान रहा है, जिसकी जमीन पर बिना जोत वाले किसान काम करते हैं। एक आंकड़े के मुताबिक, देश के 11 करोड़ से ज्यादा किसानों के पास अपनी जमीन नहीं है।

पंजाब को सबसे संपन्न प्रांत माना जाता रहा है, लेकिन कर्ज में डूबकर आत्महत्या करने वाले किसानों की तादाद वहां सबसे ज्यादा है। एनएसएसओ की सर्वे रिपोर्ट बताती है कि गांवों में आजादी के लंबे अंतराल के बाद भी दस प्रतिशत ऐसे लोग हैं, जिनके पास खर्च करने के लिए बमुश्किल से दस रुपये भी नहीं होते हैं।

इस लिहाज से देखा जाए, तो उपभोग और विकास के अंतर्संबंधों में कोई तालमेल नहीं दिखाई पड़ता है। मतलब, जब तक गांव के सबसे गरीब व्यक्ति व परिवार के पास विकास की किरण नहीं पहुंचती, ग्रामीण विकास का दावा नहीं किया जा सकता।

अर्थव्यवस्था की अभी जो दिशा और दशा है, वह ठीक कही जा सकती है, लेकिन अभी बहुत कुछ करने की जरूरत है। आज जरूरत इस बात की है कि गांवों में रोजगार सृजन के नए अवसर तलाशे जाएं और उन जरूरतों को पूरा करने के लिए कदम उठाए जाएं, जिनकी जरूरत आम आदमी को होती है। मतलब, विकास की किरण गांव के हर तबके तक जानी चाहिए, न कि कुछ गिने-चुने लोगों के पास।